Dr.Raman Kumar Thakur

Assistant professor(Guest) Department of Economics, D.B.College, Jaynagar, Madhubani.

Class:-B.A.part-1(Hons.)Date:-28-10-2020. Lecture n.-28.

Topic:- प्रतिष्ठित सिद्धांत की आलोचनात्मक समीक्षा(Critical Evaluation of classical Theory)

:- विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने प्रतिष्ठित सिद्धांत की कुछ मूलभूत त्रुटियों के आधार पर काफी आलोचनाएं की है जो इस प्रकार से हैं:-

1).सामाजिक क्षेत्र उपेक्षित है:- प्रतिष्ठित सिद्धांत ने आर्थिक विकास में पूर्ण प्रतियोगिता एवं निजी संपत्ति की संस्था पर ही विशेष महत्व दिया, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र की घोर उपेक्षा की है. प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री राजकीय हस्तक्षेप के विरोधी होने के

कारण सार्वजनिक क्षेत्र के भी प्रबल विरोधी थे जबकि आज के इस कल्याणकारी युग में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका को सर्वत्र स्वीकार किया है।

2). तकनीकी प्रगति की उपेक्षा:- प्रतिष्ठित विचारको की सबसे बड़ी त्रुटि अपने विकास मॉडल में इन लोगों ने तकनीकी प्रगति का अपेक्षाकृत काफी कम महत्व दिया है. वस्तुतः यह समझने में भूल कर गए कि आर्थिक विकास सुधरी हुई उत्पादन तकनीक एवं विकसित प्रौद्योगिकी पर ही निर्भर करता है। विकसित देशों का तीव्र विकास तो उन्नत विज्ञान एवं तकनीक का ही परिणाम है जिसकी शायद इन अर्थशास्त्रियों ने कल्पना भी नहीं की।

3). मध्यम वर्ग की अवहेलना:- हैरड जैसे आधुनिक अर्थशास्त्रियों का आरोप है कि प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने अपने विकास सिद्धांत में मध्यम

वर्ग की अवहेलना की, ओर समाज को मात्र दो ही वर्गो पहला पूंजीपति एवं भूमि पति तथा दूसरा श्रमिक में बांटा तथा यही कहा गया कि पूंजी-संचय केवल पूंजीपति वर्ग ही करता है, श्रमिक नहीं। जबकि आज मध्यम वर्ग का महत्व बढ़ गया है। पूंजी संचय में वस्तुतः तीनों वर्गो धनी, मध्यम ,और गरीब का योगदान रहता है।

4). अवास्तविक नियमों की मान्यता:- प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों की एक गलत और अवास्तविक मान्यता रही है कि "पूंजीवादी विकास का अंतिम परिणाम स्थिरता है" इसका कारण है उनकी धारणा के दो प्रमुख आधार थे-पहला ,ह्रासमान प्रतिफल के नियम की कार्यशीलता, तथा दूसरा, माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत. किंतु वास्तव में आज पश्चिमी विकसित देशों ने इन दोनों ही धारणाओं को पूरी तरह झुठला दिया है इसके अतिरिक्त इनकी

मान्यता पूर्ण प्रतियोगिता एवं पूर्ण रोजगार जैसी काल्पनिक तथा अव्यावहारिक धारणाओं पर आधारित है।

5). मजदूरी लगान एवं लाभ की गलत व्याख्या

इन्होंने जो लगान, मजदूरी, और लाभ की व्याख्या की है वह त्रुटिपूर्ण और अधूरी है। इन अर्थशास्त्रियों के अनुसार लगान हमेशा बढ़ता रहता है, मजदूरी निर्वाह स्तर पर स्थिर हो जाती है, तथा लाभ गिरता रहता है। जबकि ऐतिहासिक तौर पर यह गलत है। मजदूरी स्थिर न रहकर निरंतर बढ़ती रहती है. लाभ की दर गिरने की बजाय बढी है। इतना ही नहीं जिस स्थिरावस्था कि इन लोगों ने अमेरिका जैसी परिपक्व अवस्था के उदाहरण से व्याख्या की है उसकी भी पुष्टि नहीं हो पाती है।